



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब एसरो	15-12-22	2	1-6

बदलते मौसम में सरसों की फसल में हो सकती है बीमारियां, सावधानियां बरतें किसान

हिसर, 14 दिसंबर (ब्लूरो): दिसंबर माह में योग्यमान से कई प्रकार के बदलाव देखने को मिल रहे हैं। खासगती से इन दिनों में गंध्रि को ठंड पढ़ रही है जबकि दोपहर का तापमान में अभी खास गिरावट देखने को नहीं मिल रही है। इस कारण से बदलाव योग्यमान में सरसों में कई प्रकार की शीमानियां हो सकती हैं।

विलान विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सर्वतों की फसल में कई वीभारियों का प्रकोप होने का खत्ता रहता है, जिसके बलते इसकी पौधावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों की फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन वीभारियों की समय से पहले चानां बहुत जल्दी है। सर्वतों की फसल की मुख्य वीभारियों की पहलान कर उनकी रोकथाम के लिए इनकान हड्डीय द्वारा विभाग का गण एवं फसूदनशक्ति ही प्रयोग करें ताकि वीभारियों का सही समय पर उचित प्रबंध हो सके।

उत्तराखण्ड में ही किसानों द्वारा जाने वाली फसलोंमें एक महाविष्पूर्ण स्थान रखती है। सरसों वार्षीय फसलों के तहत तोरिया, राशा, तारामीरा, भूती व पीली सरसों आदि हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, बहेनगढ़, दिल्ली, फतेहबाल, दिसला, घिवानी व मेवात जिलों में बोजानी है। किसान सरसों डगाकर कम खर्च में अधिक राशनकम्या रहे हैं। किसान सरसों की वीथारी जीव समय रहने अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकधाम कर सकते हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने उपरा कि सांस्कृति ए प्रवेत्ति समर्थों की फसल में कई प्रकार



तनागलन

तनावगमन रोग में तनों पर लाम्बे आकार के भूरे जल शब्दित धड़ी बनते हैं जिन पर बाहर में सफेद फँकुट भी तरह बन जाती है। ये लक्षण पापियों व टहनीयों पर भी नजर आ सकते हैं तथा फैलने वाले या फरलियों व बनते पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाया देता है जिससे तने दृट जाते हैं और तनों के भीतर काले रंग के पिण्ड बनते हैं।

ऐसे करें बिमारियों
की दोकथान

ये हैं रास्तों की मुख्य विमारी
और उनके लक्षण

अल्टरनेशिया ब्लाइट

विद्यालय के अधिष्ठाता डॉ.

कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. एस.के. पाहुज

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुज ने बताया कि सरसों की फसल की यह मुख्य बीमारी है।

मुख्या राजानी मिल

इस थीमारी में पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का कंपारी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चुर्चा सा बन जाता है।

सफेद रत्ना

सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के लेंगे भूले से गहरा होते हैं।

रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं।
इससे तने के फूल बेढ़ंग आकार के हो जाते हैं जिसे



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्पादक पत्र का नाम
दैनिक अखबार

दिनांक
15-12-22

पृष्ठ संख्या
५

कॉलम
६-८

अच्छे उत्पादन के लिए दिसंबर के तीसरे, चौथे सप्ताह में करें टमाटर, प्याज व मिर्च की बिजाई सब्जियों की फसलों को पाले से बचाने के लिए देखभाल करना जरूरी

भारतपत्र न्यूज़ | हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के वैज्ञानिकों के अनुसार, दिसंबर माह के तीसरे और चौथे सप्ताह में जहां रबी की प्याज, टमाटर, बैंगन और मिर्च की फसल को इस माह भी उगाया जा सकता है। वहाँ, उगाई गई आलू और अन्य सब्जियों फसलों की देखभाल बहुत ही जरूरी है। फसलों को आगामी दिनों में पाले से बचाने के लिए पालिथीन का भी प्रयोग किया जा सकता है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार (एचएयू) के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्योज ने बताया कि दिसंबर के तीसरे और चौथे सप्ताह में फसलों को अधिक देखभाल की जरूरत होती है। थोड़ी देखभाल कर किसान फसलों को रोगाश्वस्त होने से भी बचा सकता है। उन्होंने बताया कि सर्दी में आलू की फसल को रोगों से बचाने के लिए क्रीटनाशक दवाओं के प्रयोग कर नियंत्रण किया जा सकता है।

फसलों में तैयारी व बचाव के लिए यह करें किसान

प्याज़: प्याज को पनीरी इस माह तैयार हो जाएगी। ऐसे में समय से खेत को तैयार करें। रोपाई का सबसे अच्छा समय दिसंबर के अंतिम सप्ताह है।



आलू: खेत की सिंचाई करें तथा हानिकारक कीटों व बीमारियों से रक्षा करो। ध्यान रखें कि आलूओं की खुदाई से कम से कम तीन सप्ताह पूर्व दवाओं का प्रयोग बंद कर दें।



टमाटर: नसरी में की गई बिजाई की देखभाल करें। इस माह भी नसरी में बिजाई की जा सकती है। बिजाई से पहले २.५ ग्राम कैम्प्टन वा थाइरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज का उपचार करें। कम तापमान होने के कारण अंकुरण तथा पौध को बढ़ावार धीमी होगी।

बैंगन: नसरी में पौध की देखभाल करें। इस माह भी (यदि बिजाई पहले नसरी की है) बिजाई की जा सकती है। पौधे को पाले से बचाने का प्रबंध करें।



मिर्च: नसरी में बिजाई दिसंबर के अंतिम पञ्चवाहे में की जा सकती है। ठंड होने से बीजों को उगने में अधिक समय लगेगा। नसरी में पौध को पाले से बचाना चाहिए।





चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम
अभ्युक्तज्ञाता

दिनांक
15-12-22

पृष्ठ संख्या
2

कॉलम
2-6

बीमारी से बचाने के लिए फसल में शाम को करें दवा का छिड़काव

एचएयू के कुलपति ने सरसों फसल की बीमारियों के प्रति किसानों को सचेत किया

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) प्रशासन ने सरसों की फसलों में लगने वाले रोग को लेकर किसानों को सतर्क किया है। अधिकारियों ने बताया कि रेवाड़ी, महेंद्रगढ़, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, भिवानी व मेवात में सबसे अधिक शेत्र में सरसों की विजाइ छोटी है। तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों में इस समय बीमारी आ सकती है।

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव संदेह शाम 4 बजे से करें ताकि मधुमुखियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती है। उन्होंने बताया कि अग्रेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि तिलहन विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके कारण इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बीमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। सरसों की फसल की मुख्य बीमारियों की पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किए गए फॉर्म नाशकों से प्रयोग करें ताकि बीमारी का सही समय पर उचित प्रबंध हो सके।

पैहां साथों की मुख्य बीमारी और उनके लक्षण



सफेद रुतुआ। संकेत



अल्टरनेरिया ब्लाइट। संकेत

■ **अल्टरनेरिया ब्लाइट :** कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि सरसों की फसल की यह मुख्य बीमारी है। इस बीमारी में पौधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छाले दिखाए देने लगते हैं।

■ **फुलिया या डाउनी मिल्डू :** इस बीमारी में पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूंक सा बन जाता है।

■ **सफेद रुतुआ :** सरसों की इस बीमारी

में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इसमें तने व फूल बढ़ाने आकार के हो जाते हैं, जिसे स्टैग हेड कहते हैं। यह बीमारी ज्यादा पछेती फसल में अधिक होती है।

■ **तनागलन :** तनागलन रोग में तनों पर लंबे आकार के भूरे जल शक्ति धब्बे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फॉर्म की तरह बन जाती है। ये लक्षण पत्तियों व टहनियों पर भी नजर आ सकते हैं तथा फूल बढ़ने या फलियों बनने पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाई देता है। जिससे तने टूट जाते हैं और तनों के भीतर काले रंग के पिंड बनते हैं।

ऐसे करें बीमारियों की रोकथाम

पादप रोग विभागीय डॉ. एचएस सहारण के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रुतुआ बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम पैकोजेब (डाइप्सेन वा इंडोमिल एम 45) को 250 से 300 लौटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 2 बार छिड़काव करें। इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बोन्डाइजिम (बाक्सिसिटन) प्रति किलोग्राम बीज के हिस्साब से बीज उपचार करें। जिन बीजों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहाँ ब्रिजाई के 45 से 50 दिन व 65 से 70 दिन के बाद कार्बोन्डाइजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार छिड़काव करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दूरभूमि	15-12-22	10	2-6

सरसों की अधिक पैदावार के लिए बीमारियों की समय से पहचान व दोकथाम जरूरी : प्रो. काम्बोज

■ सरसों की बीमारियों की रोकथाम के लिए रिफरेंश क्रिएटर एफ्यूदनशक्ति का ही प्रयोग करें

डॉर्टमून न्यूज़ || हिसार

सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, साथा, तापामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, चिंवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे



हैं। किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं।

विश्वविद्यालय के कुलगति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि अगती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय

सफेद रटुआ

सरसों की इस बीमारी में प्रतिदीप घर सफेद और तीम रठा के छोटे छब्बे दे प्रकट होते हैं। इससे तक व पूल बेट्टा आकार के हो जाते हैं जिसे टटी टैंड भूलते हैं। यह बीमारी उथाड़ पहेंडी फसल ने अधिक होती है।

से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं।

उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए जाने वाले डिफ़क्वाब सर्टिफ़िकेट साथेकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपर बढ़ाने में

तानागलज़: तानागलज़ रोड ने तब्बो पर लट्टुदे आकार के बूटे जल शैक्षिक धर्म करते हैं जिल पर बद में सरेव एफ्यूद की तरफ बढ़ा जाती है। ये लक्षण परियों द्वाटहियों पर भी नजर आ सकते हैं तथा पूल आवै या फलियों बढ़ाने पर इस दोनों का अधिक आक्रमण दिखाई देता है जिससे लगे दूट जाते हैं और लगे के भीतर काढ़े रठा के पिण्ड बढ़ते हैं।

ऐसे करें बीमारियों की रोकथाम

पदप रोड विनायका डॉ. दरघरा लहरण के अनुसार सरसों की अट्टरनेशन ब्लाइट, पुरिया और सफेद रहुओं बीमारी के लक्षण जल जाते हैं। 600 वाले बीकोजेव (डिफ़ील वा इंडेपिल एम 45) को 250 से 300 लीटर पानी ने जिलाकर प्रति दफ़्त दी दर से 15 दिन के अंतर पर 2 बार डिफ़काव करें। इसी प्रकार तला गलब रोड के लिए 2 वाले कार्बिल्डजिम (बाटिस्टिक) प्रति किलोग्राम बीज के हिन्दाथ दे दीज उपकर करें। जिल क्षेत्र में तला गलब रोड का प्रकोप हर जात होत है वहाँ डिज़बैक के 45 से 50 दिन तथा 65 से 70 दिन के बद कार्बिल्डजिम का 0.1 प्रतिशत की दर दे दी बार डिफ़काव करें।

सहायक होती है। तिलहन विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में सरसों की फसल में कई बीमारियों कमी आ जाती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जड़ोट समाचार	१५-१२-२२	५	४-६

सरसों की अधिक पैदावार के लिए बीमारियों की समय से पहचान तरोकथाम झुझी : बी.आर. काम्बोज

हिसार, 14 दिसंबर (विंड वर्ष) : सरसों की बीमारियों की रोकथाम के लिए सिफारिश किए गए फर्कूदनाशकों का ही प्रयोग करें सरसों रखी में ऊर्ध्वा जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में थोई जाती है। किसान सरसों ऊर्कार कम खुर्च में अधिक लाभ कमा सकते हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति बी.आर. काम्बोज ने बताया कि अगती व पछती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों को रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिक्काव सटेव सार्वकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में



महायक होती है। तिलहन विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। सरसों की फसल की मुख्य बीमारियों की पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किए गए फर्कूदनाशकों ही प्रयोग करें ताकि बीमारी का सही समय पर उचित प्रबंध हो सके।

ये हैं सरसों की मुख्य बीमारी और उनके लक्षण

अल्टरनेरिया ब्लाइट : कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि सरसों की फसल को वह मुख्य बीमारी है। इस बीमारी में पौधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और उसे पर गोल छल्ले दिखाए देने लगते हैं।

फुलिया या ढाड़नी मिल्डू : इस बीमारी में पत्तियों की निचली मत्तह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों

का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्ण सा बन जाता है।

सफेद रुआ : सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और छोटी रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बेहुग आकार के हो जाते हैं जिसे स्ट्रेंग हैंड कहते हैं। यह बीमारी ज्यादा पछेती फसल में अधिक होती है।

ऐसे करें बीमारियों की रोकथाम : पादप रोग विभाग व्यापक डॉ. एच.एस. महाराण के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रुआ बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैकोनेक (डाइथेन या इडोफिल एम 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 2 बार छिक्काव करें। इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बेनडाजिम (बाकिस्टिन) प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहाँ बिजाई के 45 से 50 दिन तथा 65 से 70 दिन के बाद कार्बेनडाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार छिक्काव करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्बन्धित पत्र का नाम टी.लो। १६२०१२	दिनांक 15.12.2022	पृष्ठ संख्या -----	कॉलम -----
----------------------------------------	----------------------	-----------------------	---------------

सरसों की अधिक पैदावार के लिए बीमारियों की समय से पहचान व रोकथाम जरूरी : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार: सरसों रबी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों बीमारी फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती है। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, भिवानी व

मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव

सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती है। तिलहन विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बीमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। सरसों की फसल की मुख्य बीमारियों की पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किए गए फूर्नदनाशकों ही प्रयोग करें ताकि बीमारी का

सरसों की बीमारियों की रोकथाम के लिए सिफारिश किए गए फूर्नदनाशकों का ही प्रयोग करें

सही समय पर उचित प्रबंध हो सके।

ये हीं सरसों की मुख्य बीमारी और उनके लक्षण

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एम.के. पाहुजा ने बताया कि सरसों की फसल की यह मुख्य बीमारी है। इस बीमारी में पीथे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छल्ले दिखाए देने लगते हैं।





चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पान्च बजे	14.12.2022	-----	-----

सरसों की बीमारियों की रोकथाम के लिए सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों का ही प्रयोग करें।

सरसों की अधिक पैदावार के लिए बीमारियों की समय से पहचान व रोकथाम जरूरी : प्रो. काम्बोज

पंच की व्याप

हिमारा, मराठों खें मेराई जाने पड़ती
फसलों मे एक व्यापारी स्थान रखती है।
मराठों व्यापक फसलों के लकड़ तोरेख, तथा,
तामारीदा, भूरे वे गोली मराठों आते हैं।
तरिकाला मे मराठों युद्ध क्षय से रोका,
मार्दानग, तिमार, पलेशबाद, तिमार, चित्ताबा-
व य फसल जिसों वे बोहं रहती हैं। नियमन गराह
उत्तराखण्ड कम में अधिक लकड़ काम रहते हैं।
तिमार सरठों वही लौटीं जो समाज लकड़
अच्छी तरह प्राप्ति कर उत्तमा आसानी से
रोकताम कर सकते हैं।

विनाशकदाता के बहुतांगी थीं, और अत्यधिक ने भागाय कि अपनी व फैली सरदी की घटना में वह प्रकाश वह जीवनियों का प्रदायक हो सकता है, जिनमें विनाशक संघर्ष में वाहान कर रोकायाम कर लकड़ियां से अधिक विद्युत द्वारा उत्पन्न कर सकते हैं। उन्होंने भागाय

विनाश विनाशितात्प्राण विवरणिता विद्
ना एवं उत्तरात्मको ही प्रयोग करते लक्षि योग
का साथी समय पर उत्तिष्ठ प्रयोग हो सके।
ये हैं सरस्वती की भूषण चीजोंपर ३
उत्तरक लक्षण
आल्टरेनिया लसाइट



फुलिया चा डाढ़नी
मिळू

यहाँ सब बन जाता है।
समझें इन आप
जल्दी को इस खींचारी
में पालने का एक समेक और
जीवन यहाँ के होटें खेले में
प्रकट होता है। इसमें तब यह
फूल बेहुल अकाल के ही
ट्रॉप होड़ भड़ो है। यह खींचारी
जगत में अधिक होती है।

महाराष्ट्र परियों व ठाणीयों पर भी नवत असलांगे हैं ताक फूल आने का पर्याप्त बनने पर इस गांव का अधिक अधिकारण दिखाई देता है जिससे लोग टट जाते हैं और उनके भौतिक स्वास्थ्य गांव के लिए बनता है।

ऐसे कर्म जीवनार्थियों की गोपनीयता
एक एक विपाकांशमध्ये तीन एक-एक
स्थानमें के अनुसार सार्वत्री की अवलोकनीय
स्थान-पूर्णिमा और वर्षभेद यात्रा योग्यताएँ के
स्थान-पर्वत आठीं से 600 पास बढ़ती हैं (जैसाने पा इन्डिपिन्युल एण् 45) और 250 से
300 स्थान पानी में विस्तार प्राप्त एकही की
दर से 15 दिन के अंत तक 2 का विश्वास्य
होता है। इसी प्रकार तब जलन रोग के लिए 2
एवं 3 का कार्यविनाश (विलीनिट) की फिलोसोफी
जीव के विवरण से संबंध उत्पन्न होता है। जिन
सेवाओं में नव जनन रोग का प्रबोध हर साल
होता है वहाँ विश्वास्य के 45 से 50 दिन तक
65 से 70 दिन के बाद कार्यविनाश का 0.1



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समाचार पत्र का नाम सभस्त्र द्विमण्डा	14.12.2022	-----	-----

सरसों की बीमारियों की रोकथाम के लिए सिफारिश किए गए फफुंदनाशकों का ही प्रयोग करें

समस्त हरियाणा न्यूज़

अधिक पैदलान सामिल कर सकते हैं। उन्होंने कहा है : इस बीमारी में भीषण के पत्तों व फलों पर गोत भीतर बढ़ते हैं। ऐसे करें विधारियों की रोकथाम : पाट रोग विभागाध्यक्ष द्वारा प्रदेश सहाय के अनुसार सरसों की बीमारियों का नियन्त्रण द्वारा देख लगते हैं। फूलिया या छाड़नी विलूँ : इस अप्रैल व जून में सरसों मुख्य रूप से भेजाये, व हो, जो उत्तर बहने में ग्रहणक होते हैं। तिलहन बीमारी में पत्तियों में नियती मत्तू पर भूषण के बीमारी के लक्षण नज़र आते ही 600 ग्राम मैकोबेच (डायबेन या इंडोफिल यम 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 2 बार डिफुक्स दें। इसी प्रकार उन बीमारी की सरपर रही अच्छी तरह पहचान कर जाती है। इसलिए, विसर्जनों को फलत की अच्छी और जीव रूप के संरेख बचे से उकट होते हैं। इससे गतल रोग के लिए 2 ग्राम कार्बो-डायबेच (वालीरिट्र)

हिसार। सरसों रखी बीमारी जाने वाली फलतों में इष किसान फलत की बीमारियों की रोकथाम के बाधे रोग के धब्बे बढ़ते हैं। यह दिन याद है इन धब्बों के तात्परीय, रुप, लालारी, भूरे व योनी सरसों वर्षे के छाद कर्त्तव्य विधुलियों को कोई नुस्खान दिखाए देने लगते हैं। फूलिया या छाड़नी विलूँ : इस अप्रैल व जून में सरसों मुख्य रूप से भेजाये, व हो, जो उत्तर बहने में ग्रहणक होते हैं। तिलहन बीमारी में पत्तियों में नियती मत्तू पर भूषण के बीमारी के लक्षण नज़र आते ही 600 ग्राम मैकोबेच (डायबेन या इंडोफिल यम 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 2 बार डिफुक्स दें। इसी प्रकार उन बीमारी की सरपर रही अच्छी तरह पहचान कर जाती है। इसलिए, विसर्जनों को फलत की अच्छी और जीव रूप के संरेख बचे से उकट होते हैं। इससे गतल रोग के लिए 2 ग्राम कार्बो-डायबेच (वालीरिट्र)

विधारियों के बुलावाले प्रो. नी.आर. काम्योज ने में पहचानक बहुत उम्मीद है। वे हैं सरसों की मुख्य कहते हैं। तनामालन : तनामालन योग में गतीं पर सम्बद्ध करना कि अपेक्षी व पौष्टी सरसों की फलत में बढ़े विधारी और उनके लक्षण : अल्टानोरिया व्याहृत : अवका के भूषण तात्पुर धब्बे कहते हैं विसर्जन पर याद है वहां बीमारी के 45 से 50 दिन तक 65 से 70 दिन प्रकार की बीमारियों का प्रक्षेप हो सकता है, जिनको कृषि महाविद्यालय के अधिकारी द्वारा एक्स-पहुँच में सहेत फॉर्म द्वारा लह बन जाती है। ये लक्षण के बदल कर्लीनाशक का 0.1 प्रतिशत की दर से दो विसर्जन मुख्य से पहचान कर रोकथाम कर फलत से जे कामय कि सरसों की फलत की यह मुख्य बीमारी धब्बों व टहानियों पर भूषण भासकते हैं। उन्हें के बारे डिफुक्स करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठ्यक्रम पत्र	14.12.2022	-----	-----

सरसों की अधिक पैदावार के लिए बीमारियों की समय से पहचान व रोकथाम जरूरी : प्रो. बी.आर. काम्बोज

सरसों की बीमारियों की रोकथाम के लिए सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों का ही प्रयोग करें

पाठकपक्ष चूज

हिसार, 14 दिसम्बर : सरसों तरी में उगाई जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। हरियाणा में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि अगेती व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव सायंकाल को 3 बजे के बाद



करें ताकि मधुमकिख्यों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती है। तिलहन विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बीमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। सरसों की फसल की मुख्य बीमारियों की पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों ही प्रयोग करें ताकि बीमारी का सही समय पर उचित प्रबंध हो सके।

ये हैं सरसों की मुख्य बीमारी और उनके लक्षण

अल्टरनेरिया ब्लाइट

कृषि महाविद्यालय के

अधिकारा डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि सरसों की फसल की यह मुख्य बीमारी है। इस बीमारी में पौधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पत्ते पर गोल छल्ले दिखाए देने लगते हैं।

फुलिया या डाढ़नी मिल्ड

इस बीमारी में पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्ण सा बन जाता है।

सफेद रत्नांश

सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छोटे धब्बे से प्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बेहंग आकार के हो जाते हैं जिसे स्टैंग हैंड कहते हैं। यह बीमारी ज्यादा पछेती फसल में अधिक होती है।

तनागलन

तनागलन रोग में तनों पर लम्बे आकार के भूरे जल शक्ति धब्बे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फफूंद की तरह बन जाती है। ये

लक्षण पत्तियों व टहनियों पर भी नजर आ सकते हैं तथा फूल आने या फलियां बनने पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाई देता है जिससे तने टूट जाते हैं और तनों के भीतर काले रंग के पिण्ड बनते हैं।

ऐसे करें बीमारियों की रोकथाम

पादप रोग विभागाध्यक्ष डॉ. एच.एस. सहारण के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रत्नांश बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैंकोजेब (डाइथेन या इंडोफिल एम 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 2 बार छिड़काव करें। इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बोन्डाजिम (बाविस्टिन) प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। जिन क्षेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहां बिजाई के 45 से 50 दिन तथा 65 से 70 दिन के बाद कार्बोन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार छिड़काव करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नम - छोर न्यूज ॥ 14 दिसंबर नम - छोर २	14.12.2022	-----	-----

किसान सरसों की बीमारी की समय रहते रोकथाम कर सकते हैं : कुलपति

नम-छोर न्यूज ॥ 14 दिसंबर

हिसार। सरसों रबी में उगाइ जाने वाली फसलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सरसों वर्गीय फसलों के तहत तोरिया, राया, तारामीरा, भूरी व पीली सरसों आती हैं। प्रदेश में सरसों मुख्य रूप से रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, फतहाबाद, सिरसा, भिवानी व मेवात जिलों में बोई जाती है। किसान सरसों उगाकर कम खर्च में अधिक लाभ कमा रहे हैं। किसान सरसों की बीमारी की समय रहते अच्छी तरह पहचान कर उनका आसानी से रोकथाम कर सकते हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि अग्री व पछेती सरसों की फसल में कई प्रकार की बीमारियों का प्रकोप हो सकता है, जिनकी किसान समय से पहचान कर रोकथाम कर फसल से अधिक पैदावार हासिल कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि किसान फसल की बीमारियों की रोकथाम के लिए किए जाने वाले छिड़काव सदैव साधारणकाल को 3 बजे के बाद करें ताकि मधुमासिखियों को कोई नुकसान न हो, जो उपज बढ़ाने में सहायक होती है। तिलहन विभाग के पादप रोग विशेषज्ञ के अनुसार सरसों की फसल में कई बीमारियों का प्रकोप होने का खतरा रहता है, जिसके चलते इसकी पैदावार में कमी आ जाती है। इसलिए किसानों को फसल की अच्छी उपज हासिल करने के लिए इन बीमारियों को समय से पहचानना बहुत जरूरी है। सरसों की

ऐसे करें बीमारियों की रोकथाम

पादप रोग विभागाध्यक्ष डॉ. एचएस सहारण के अनुसार सरसों की अल्टरनेरिया ब्लाइट, फुलिया और सफेद रतुआ बीमारी के लक्षण नजर आते ही 600 ग्राम मैकोजेन (डाइथेन या इंडोफिल एम 45) को 250 से 300 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से 15 दिन के अंतर पर 2 बार छिड़काव करें। इसी प्रकार तना गलन रोग के लिए 2 ग्राम कार्बोन्डाजिम(बविस्टिन) प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। जिन शेत्रों में तना गलन रोग का प्रकोप हर साल होता है वहाँ बिजाई के 45 से 50 दिन तथा 65 से 70 दिन के बाद कार्बोन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से दो बार छिड़काव करें।

फसल की मुख्य बीमारियों की पहचान कर उनकी रोकथाम के लिए किसान विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश किए गए फूलूंदनाशकों ही प्रयोग करें ताकि बीमारी का सही समय पर उचित प्रबंध हो सके।

ये हैं सरसों की मुख्य बीमारी और उनके लक्षण

अल्टरनेरिया ब्लाइट : कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि सरसों की फसल की यह मुख्य बीमारी है। इस बीमारी में पैधे के पत्तों व फलियों पर गोल व भूरे रंग के धब्बे बनते हैं। कुछ दिन बाद इन धब्बों का रंग काला हो जाता है और पते पर गोल छल्ले दिखाए देने लगते हैं।

फुलिया या डाउनी मिल्डू : इस बीमारी में

पत्तियों की निचली सतह पर भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और धब्बों का ऊपरी भाग पीला पड़ जाता है व इन धब्बों पर चूर्ण सा बन जाता है। सफेद रतुआ : सरसों की इस बीमारी में पत्तियों पर सफेद और क्रीम रंग के छोटे धब्बे से ग्रकट होते हैं। इससे तने व फूल बेंदंग आकार के हो जाते हैं जिसे स्टंग हैंड कहते हैं। यह बीमारी ज्यादा पछेती फसल में अधिक होती है।

तनागलन : तनागलन रोग में तनों पर लम्बे आकार के भूरे जल शक्ति धब्बे बनते हैं जिन पर बाद में सफेद फूलूंद की तरह बन जाती है। ये लक्षण पत्तियों व टहनियों पर भी नजर आ सकते हैं तथा फूल आने वा फलियां बनने पर इस रोग का अधिक आक्रमण दिखाई देता है जिससे तने दृट जाते हैं और तनों के भीतर काले रंग के पिण्ड बनते हैं।